मकसद

देवांश कुच्छल,
रुड़की

धरती आज दहली सी है, अम्बर भी है धुंआ–धुंआ।
आँखें भी आज नम सी हैं, क्यों लबों से हैं सिसकारियां।।

कोई तानाशाह है तो कोई है जनरक्षक,
कोई बे–मकसद है तो कोई है बा–मकसद

खामोश क्यों है ये ज़माना,
क्यों हैवानियत को हमने खुदा माना।
वाक युद्ध में फिर क्यों समय गँवाना,
इतना ही तुझमें गरूर है तो कुछ करके दिखाना।।

सियासी खेल में बचपन बिखर जाते हैं,
किसी की लड़ाई में किसी के आंगन उजड़ जाते हैं।
खो जाते हैं खिलौने किसी के,
तो किसी के नयन ही बिछड़ जाते हैं।।

ये दौर तेरा भी है मेरा भी, ये मुल्क तेरा भी है मेरा भी।
तो क्यों इस सोच को, धर्मों की बेड़ियों से जोड़ा है।

ले उठा कदम, अब बढ़ा बदम, चल खा कसम, पकड़ हाथ कलम।
जो करना है कर के दिखाएंगें, इस देश को आगे ले जायेंगें।।
नफरत से बचाएंगें, सोने की चिड़िया इसको फिर से बनाएंगें।।

जय हिन्दी, जय भारत।